वॉल स्ट्रीट: भीतर या बाहर

हर व्यवस्था आखिरकार एक ही सवाल पूछती है।

यह नहीं कि तुम कौन हो। यह नहीं कि तुम क्या जानते हो। यह नहीं कि तुम क्या मानते हो।

सिर्फ़ एक सवाल मायने रखता है।

क्या तुम भीतर हो? या तुम बाहर हो?

बाज़ार इसी सिद्धांत पर काम करते हैं। क्लब इसी सिद्धांत पर काम करते हैं। सरकारें इसी सिद्धांत पर काम करती हैं। यहां तक कि दोस्तियां भी इसी सिद्धांत पर काम करती हैं।

नियम हमेशा अलग-अलग बताए जाते हैं। तंत्र कभी अलग नहीं होता।

एक बार भीतर आने पर, लोग इसे अवसर कहते हैं। एक बार बाहर होने पर, लोग इसे बहिष्करण कहते हैं। फिर भी संरचना वही रहती है।

वॉल स्ट्रीट इसे धरती पर किसी भी जगह से बेहतर समझता है।

कीमत शायद ही कभी बाधा होती है। पहुँच होती है। जानकारी होती है। समय होता है। स्थिति होती है।

दुनिया पैसे के बारे में कहानियां सुनाती है क्योंकि पैसे को समझाना आसान है। पहुँच को समझाना कठिन है।

पैसे केप्रकट होने से बहुत पहले पहुँच मूल्य बनाती है। अधिकार केप्रकट होने से बहुत पहले पहुँच शक्ति बनाती है। उत्पादों के प्रकट होने से बहुत पहले पहुँच बाज़ार बनाती है।

इसीलिए सबसे महत्वपूर्ण फ़ैसला कभी यह नहीं होता कि तुम क्या ख़रीदते हो। यह होता है कि क्या तुम्हें उस कमरे में जाने की अनुमति है जहां ख़रीद होती है।

सभ्यता बस कमरों का एक संग्रह है।

कुछ दरवाज़े खुले हैं। कुछ दरवाज़े बंद हैं।

ज़्यादातर लोग अपना जीवन ताले को देखते हुए बिता देते हैं। कुछ लोग अपना जीवन एक और दरवाज़ा बनाते हुए बिताते हैं।

Ferdinando Frega